PARIPREKŞYA, Vol. XXX, Year 2018, ISSN 2278-0602

62

नक्सलवाद पर वैचारिक दृष्टिकोण : समस्या एवं समाधान के परिप्रेक्ष्य में

डॉ0 आभा सिंह

एसोसिएट प्रोफेसर, राजनीतिक विज्ञान, विभाग, कु0 मायावती राजकीय महिला स्नातकोत्तर महाविद्यालय, बादलपुर गौतमबुद्ध नगर

भारतीय समाज एक ऐसा समाज है जिसका संपूर्ण अववोधन तभी संभव है, जब वर्ण व्यवस्था से जाति आधारित समाज का संपूर्ण अध्ययन सुव्यवस्थित तरीके से किया जाय। इस अध्ययन की प्रक्रिया में हमें आदिवासी और उनकी प्राचीन और परंपरागत संस्कृति से सामना होता है। इस अध्ययन के चक्र में प्रविष्ट होते ही एक उलझन सा हमारे मस्तिष्क में चक्रमण करने लगता है कि आखिर में हिन्दुस्तान की तकदीर और तदबीर का फेसला, बादशाहत के दौर में होने के बावजूद और स्वतंत्र भारत में भारतीय नीति नियंताओं के शासन तंत्र स्थापित करने के बाद भी आदिवासियों को आज तक इंसाफ क्यों नहीं मिला? शायद इसीलिए हमारे महामहिम राष्ट्रपति महोदय ने आदिवासियों के ऊपर छा रहे चतुर्दिक संकट पर गहरी चिंता जताई। क्योंकि आज लगभग एक करोड़ आदिवासी अपने अस्मिता के लिए संघर्ष कर रहे हैं। ये सभी अन्यान्य समूहों में रहते हैं जो घुमंतू जीवन जीते हैं। इन्होंने अपना आधार पूरी तरह से खो दिया है।[1] यह सारी उलझन और उनकी परेशानियाँ हमें यह सोचने पर बाध्य कर देती हैं कि इनके भविष्य का क्या होगा? एक समय ऐसा भी आएगा कि ये सारी जातियाँ विलुप्त होकर इतिहास के चंद पन्नों तक सिमट जाएगी क्योंकि इनकी वनसंपदा से बहिष्कृत और उपेक्षित किया जा रहा है। ये सारी जातियाँ आज विकास के दंश को झेलते–झेलते आखिर किस दिशा की तरफ जा रही हैं? आखिर में हमें यह समझना चाहिए कि ये न तो खौफनाक जानवर हैं और ना ही हमारे जैसे सभ्यताओं की परवरिश में पले बढ़े इन्सान। ये बेचारे अकल्पनीय परिस्थितियों के दबाव में आकर अपनी गौरवशाली परंपरा को तिलांजलि देकर आपराधिक कृत्यों एवं वेश्यावृत्ति जैसे कुकर्मों में लिप्त हो रहे हैं। शायद विकास की कृत्रिमता और क्रूरता इन सबको कच्चा चबाने पर आमादा है। हम यहाँ पर इनकी दुर्दशाओं का अरण्यरोदन नहीं करते हैं। बल्कि हम इस क्रूर सत्य का राजफाश करना चाहते हैं कि इनके कल्याण एवं उत्थान के निमित्त जो भी योजनाएँ बनी, वे सब ऊँट के मुँह में जीरा तो बनी ही। इसके अलावे ये सारी योजनाएँ एवं प्रयोजनाएँ बिचौलियों एवं दलालों के चंगुल से न बच सकी और स्वाहा हो गई। इसीलिए हम आज समाज में भीड़ और मेड़ के ही साक्षी है। आदिवासी तो इन्हीं भीड़ में कही खोये सिमटे और करूण रोदन करते नजर आते हैं।